Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2024 = 8.153
https://www.srjis.com/issues_data/239
Peer Reviewed & Refereed Journal, SEPT-OCT 2024, Vol- 13/85

मिश्रित अधिगम : वर्तमान अध्यापक शिक्षा की आवश्यकता

मनीष कुमार

शोध छात्र, शिक्षाशास्त्र विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

डॉ0 उदय सिंह

प्रोफेसर, शिक्षाशास्त्र विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

Paper Received On: 20 SEPT 2024

Peer Reviewed On: 24 OCT 2024

Published On: 01 NOV 2024

Abstract

शिक्षा वर्तमान समय की वह आवश्यकता है, जिसके द्वारा व्यक्ति अपनी अन्तःनिहित शक्तियों का उपयोग करके अपने उपयोगी कार्यो को करने में सक्षम होते है। शिक्षा में अन्तःनिहित शक्तियों से तात्पर्य ज्ञान रूपी प्रकाश का उपयोग करनें से है। शिक्षा के द्वारा ही कौशलों का विकास हो सकता है। शिक्षा का मूल उद्देश्य है कि जीवन में उत्पन्न होने वाली चुनौतियों को आसान करना होता है। छात्रों द्वारा विभिन्न प्रकार से शिक्षा ग्रहण किए जाते है, जिसमें खेल का मैदान, सिनेमा घर एवं शैक्षणिक संस्थान सम्मिलित होते है। शिक्षा जीवन प्रयन्त समय तक प्राप्त किया जाता है, जिसको औपचारिक शिक्षा, अनौपचारिक शिक्षा एवं निरौपचारिक शिक्षा के रूप में वर्गिकृत किया गया है। औपचारिक शिक्षा एवं निरौपचारिक शिक्षा एक संस्था के शिक्षक द्वारा दिया जाता है, जिसमें विषय–वस्तु की निश्चितता होती है।

अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम का संचालन सम्पूर्ण भारत वर्ष में औपचारिक शिक्षा के रूप में किया जाता है। इन कार्यक्रमों में छात्रों को शिक्षण कौशलों का विकास किया जाता है, जिससे उन छात्राध्यापकों को शिक्षण कार्य करने में सुगमता होगी। जब शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम में शिक्षकों द्वारा विभिन्न तकनीकियों का प्रयोग करके शिक्षण कार्य किया जाता है, तब शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्रों का उन शैक्षिक विधियों के प्रति आकर्षण होता है। कक्षा में जो अलग शिक्षण विधियों को अपनाया जाता है, शिक्षण की विधियों से तात्पर्य पारंपरिक कक्षाओं के समान्तर ऑनलाइन कक्षाओं का संचालन किए जाने से है। जिस कक्षा में छात्र तथा शिक्षक की उपस्थिति वर्तमान परिस्थितियों में होता है, उसे आमने–सामने की कक्षा या पारंपरिक कक्षा कहा जाता है। तथा जिन कक्षाओं का संचालन आभासी माध्यमों से किया जाता है, जिसमें छात्र एवं शिक्षक की उपस्थिति का माध्यम आभासी रूप से होता है उस ऑनलाइन कक्षा कहा जाता है। वे सभी शिक्षण कार्य जो पारंपरिक कक्षाओं एवं आभासी कक्षाओं के मध्यमों से एक फ्रेम में रखकर संचालित किए जाते है। इस प्रकार से दिए जा रहे शिक्षा, मिश्रित शिक्षा के अर्न्तगत आता है। मिश्रित शिक्षा के अर्न्तगत विभिन्न तकनीकियों का उपयोग करके सीखने की प्रक्रिया को मिश्रित अधिगम कहा जाता है।

अध्यापक शिक्षा में मिश्रित शिक्षा का उपयोग एक अनुदेशन के रूप में किया जाता है, जिसमें छात्राध्यापक शिक्षा से सम्बन्धित शैक्षिक तकनीकियों को जानने एवं समझने का प्रयास करते है। अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम में शैक्षिक तकनीकियों से शिक्षा एवं प्रशिक्षण दिए जाने से उनके सीखने में वृद्धि होता है तथा उनके कौशलों का विकास होता है।

कुन्जी शब्द :– *मिश्रित अधिगम, अध्यापक शिक्षा।*

प्रस्तावना :–

शिक्षा का स्वरूप बहुत ही व्यापक है, इसमें विभिन्न स्तरों पर सीखने की प्रक्रिया को पूर्ण किया जाता है। शिक्षा ग्रहण करना एक बड़ा चुनौतिपूर्ण की स्थिति बना रहता है। जैसा कि यह स्पष्टतः कहा

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

जा सकता है कि किसी भी स्थान पर (घर हो, पास–पड़ोस हो, खेल का मैदान हो या अन्य स्थान पर) यदि कुछ सीखा जाता है तो वह अनौपचारिक शिक्षा है, जहॉ पर सीखने के लिए कुछ भी निश्चित नही होता है अर्थात छात्रों की सीखने की जिज्ञासा पूर्णतः स्वतन्त्र रूप से होता है। परन्तु छात्रों के मनोवृत्तियों को ध्यान में रखते हुए शिक्षा को विभिन्न माध्यमों से शिक्षा दिए जाने वाले शिक्षा को औपचारिक शिक्षा कहा जाता है। इस प्रणाली के अर्न्तगत एक निश्चित स्थान पर, एक निश्चित विषय–वस्तु को, निश्चित व्यक्तियों के द्वारा छात्रों को शिक्षा दिया जाता है। समय के साथ–साथ औपचारिक शिक्षा का विस्तार किया जाता रहा है।

वर्तमान समय की शिक्षा प्रणाली परिर्वति रूप में है शिक्षा प्रदान करने के साथ–साथ शिक्षा ग्रहण करने के लिए विभिन्न प्रकार की तकनीकियों का उपयोग किया जा रहा है। जिससे शिक्षा को सरल व सुलभ बनाया जा सके। इसी दृष्टिकोण को अपनाते हुए किसी पारंपरिक कक्षा के समान्तर ही ऑनलाइन कक्षाओं का संचालन किया जाता है। इन कक्षाओं में एक ही पाठ्यक्रम को दो माध्यमों के द्वारा संचालित किया जाता है, जिसे मिश्रित शिक्षा कहा जाता है, मिश्रित शिक्षा औपचारिक शिक्षा प्रणाली का ही एक कार्यक्रम है।

मिश्रित शिक्षा एक नवीन अवधारणा है इसमें दोनों शिक्षण के फायदे शामिल है। कक्षा और आईसीटी दोनों सहित सीखने का ऑफलाईन शिक्षण एवं ऑनलाईन शिक्षण का समर्थन किया है। (लालिमा और किरण लता डंगवाल, 2017)

मिश्रित शिक्षा प्रणाली में छात्रों को अपनी कोर्स में सम्मिलित सभी पाठ्यक्रमों को सीखने के लिए विभिन्न प्रकार के तकनीकि माध्यमों का उपयोग किया जाता है। सीखने के इस प्रक्रिया को मिश्रित अधिगम कहा जाता है। भारत में शिक्षा के लिए विभिन्न स्तर पर शिक्षा की व्यवस्था किया गया है। जिसमें प्राथमिक शिक्षा, माध्यमिक शिक्षा,उच्च शिक्षा एवं अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम संचालित किए जाते है। इन सभी कायक्रमों में अध्यापक शिक्षा का क्रियान्वयन उच्च स्तरों के सन्दर्भ में किया जाता है। इस कार्यक्रम में अध्ययन करने वाले सभी छात्राध्यापकों को सेवापूर्व शिक्षक कहा जाता है। अध्यापक शिक्षा कार्यक्रमों में मिश्रित शिक्षा के उपयोग से उनके ज्ञान में वृद्धि के साथ कौशलों का विकास होगा, जिससे छात्राध्यापक अपनें अर्जित ज्ञान एवं कौशलों से नवीन शैक्षिक तकनीकि का उपयोग करके भविष्य में अध्यापन कार्य कर सकता है।

अध्यापक शिक्षा में मिश्रित अधिगम का उद्देश्य :–

शिक्षा के बदलते स्वरूप को ध्यान में रखतें हुए अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम में प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे सभी छात्राध्यापकों को पारंपरिक कक्षाओं के समान्तर ही ऑनलाइन कक्षाओं का संचालन किया जाता है। इन कक्षाओं के संचालन होने से छात्राध्यापकों में विभिन्न शिक्षण कौशलों का विकास होता है। शिक्षक–प्रशिक्षण संस्थानों में अपनें कौशलों के विकास के लिए विभिन्न शिक्षण तकनीकि माध्यमों का उपयोग किया जाता है। मिश्रित शिक्षा को एकीकृत करने के लिए वर्तमान समय की पारंपरिक कक्षा के

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

समान्तर ही आभासी माध्यमों से चलने वाले शिक्षण प्रक्रिया से होता है। इन सभी शैक्षिक तकनीकियों का उपयोग एक फ्रेम में रखकर किए जाने वाले प्रक्रिया मिश्रित शिक्षा के अर्न्तगत आता है।

वर्तमान शिक्षा प्रणाली में केवल पारंपरिक शिक्षा की प्रक्रिया पूर्ण नही है तथा केवल ऑनलाईन की शिक्षण प्रक्रिया भी पूर्ण नही है। इन दोनों शिक्षण की क्रियाओं को एक साथ सम्मिलित करके किया जाना चाहिए। इस अध्ययन में पारंपरिक शिक्षण और आईसीटी शिक्षण समर्थित शिक्षण दोनों के लाभों को शामिल करता है। (डॉ0 प्रदीप कुमार एस0 एल0, 2021)

इस शिक्षा का उद्देश्य बहुत ही व्यापक है, इस उद्देश्य से छात्राध्यापकों का किसी भी माध्यम से शिक्षा प्रदान किया जाना चाहिए। अध्यापक शिक्षा में मिश्रित अधिगम के लिए विभिन्न तकनीकियों के उपयोग से छात्राध्यापकों द्वारा शिक्षण कार्य किया जाता है।

मिश्रिम अधिगम के रूप में प्रयुक्त शिक्षण प्रतिमान :–

मिश्रित शिक्षा के उपयोग से छात्रों द्वारा जो सीखा जाता है वह मिश्रित अधिगम के अन्तरर्गत आता है। मिश्रित शिक्षा में अधिगम को जारी रखने के लिए निम्नलिखित प्रतिमानों का उपयोग किया जाता है –

1. **रोटेशन प्रतिमान :–**

रोटेशन प्रतिमान को एक निश्चित कार्यक्रम के अनुसार सीखनें को आमने–सामने और ऑनलाइन के बीच स्थानान्तरित करने के लिए डिजाइन किया गया है। रोटेशन प्रतिमान सीखने की स्टेशनों की एक श्रृखला है, जिसमें छात्र घूमते रहते है। इस प्रतिमान में छात्र अपने पाठ्क्रम को अच्छे से सीखने का प्रयास करते है।

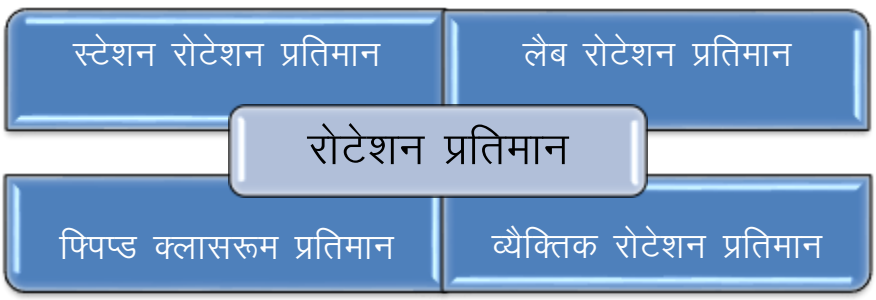

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

स्टेशन रोटेशन प्रतिमान :–

स्टेशन रोटेशन प्रतिमान जिसे कक्षा रोटेशन या कक्षा में रोटेशन प्रतिमान के रूप में जाना जाता है। इस प्रतिमान में छात्र की जरूरतों और रूचियों के आधार पर निर्देश में अन्तर करने की अनुमति देता है। इस प्रतिमान में एक स्थान पर ही छात्र घूम कर अध्ययन करते है, जिसमें ऑफलाईन कक्षाओं के साथ–साथ ऑनलाईन कक्षाओं का संचालन किया जाता है।

अरेबियन गल्फ विश्वविद्यालय में उच्च स्तर पर अध्ययनरत छात्रों को शिक्षा प्रणाली में मिश्रित शिक्षा को सम्मिलित करने पर बल दिया गया है तथा उनका उद्देश्य है कि पाठ्यक्रमों का अध्ययन कार्य पारंपरिक शिक्षण के साथ–साथ ऑनलाईन शिक्षण की क्रिया को भी किया जाता है। दोनों शिक्षण की क्रियाओं के समान्तर संचालित होने से उच्च स्तर के छात्रों को सीखनें की क्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। (अहमद मोहम्द, 2017)

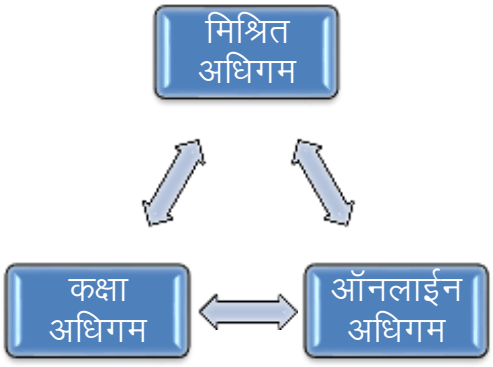

शिक्षण के लिए स्टेशन रोटेशन प्रतिमान छात्रों के सीखने के अनुभव और शिक्षकों के शिक्षण तरीको के दोनों में बदलाव लाता है। यह प्रतिमान छात्रों को विभिन्न गतिविधियों में संलग्न होने, शिक्षकों से निर्देश प्राप्त करनें, सहपाठियों के साथ मिलकर काम करने और इंटरनेट एक्सेस के साथ कंप्यूटर का उपयोग करने के अधिक अवसर प्रदान करता है। (अकिनोसो तथा अन्य, 2021)

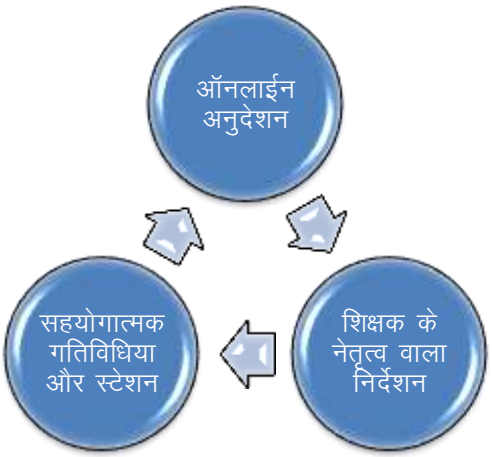

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

यह प्रतिमान उन शिक्षकों के लिए विशेष रूप से सहायक माना जाता है, जो बड़ी अकार की कक्षाओं के साथ काम कर रहे है। इस प्रतिमान के साथ छात्र अपनी सीखनें की गतिविधियों को अपने शिक्षक के निर्देशानुसार उसी समय और गति से पूरा कर सकते है।

लैब रोटेशन प्रतिमान :–

इस प्रतिमान में छात्र अपने विषय से सम्बन्धित पाठ्यक्रमों का अध्ययन करने के लिए ऑनलाईन–अधिगम स्टेशन के लिए कंप्यूटर लैब में घूमते है। कंप्यूटर कैब ऑनलाईन सीखने के लिए एक शिक्षण प्रयोगशाला है, जहॉ पर छात्र अपनी विषय–वस्तु से सम्बन्धित का अध्ययन ऑनलाईन माध्यमों से करते है।

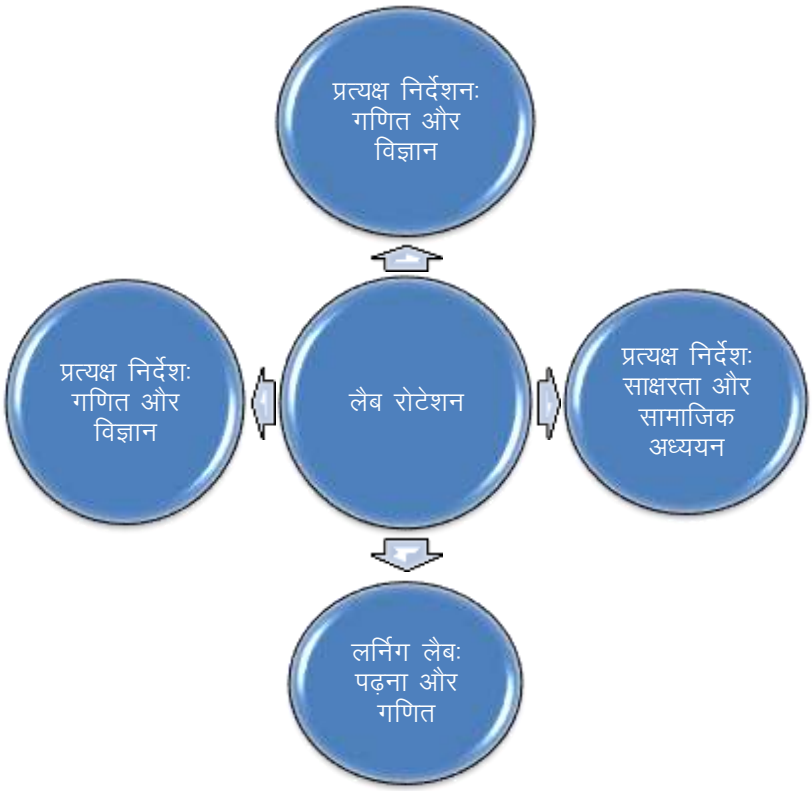

फ्लिप्ड क्लासरूम प्रतिमान :–

फ्लिप्ड क्लासरूम एक शिक्षण पद्धति है, जो कि पूरी तरह से सीखने के पारंपरिक कक्षा के विपरित होता है। इस प्रतिमान में शिक्षक सामग्री और शिक्षण प्रदान करने का मुख्य तरीका इंटरनेट के माध्यम से है। इसमें छात्र अपनें विषय–वस्तु से सम्बन्धित पाठ्यक्रमों को पर ऑनलाईन माध्यमों से अध्ययन करते है तथा अध्ययन किए गए पाठ्यक्रमों की चर्चा कक्षा में साथियों के साथ करते है। छात्रों को दिए गए गृह कार्य को कक्षाओं में पूरा नही किया जाता है।

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

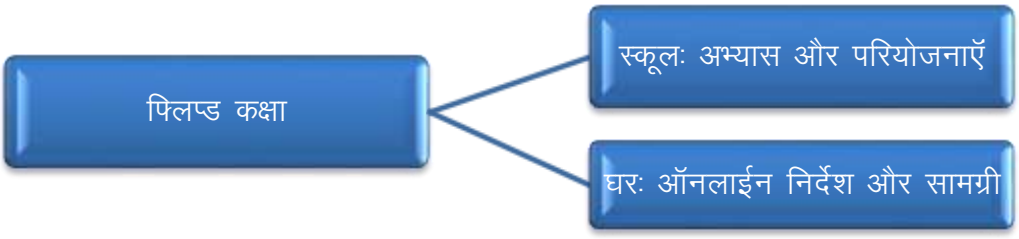

फ्लिप्ड कक्षा प्रतिमान, रोटेशन प्रतिमान के सबसे प्रसिद्ध उप–प्रतिमान में से एक है। फ्लिड अधिगम को साहित्य में इनवर्टेड अधिगम, रिवर्स क्लासरूम या इनवर्टेड क्लास के रूप में भी जाना जाता है। शिक्षक कक्षा के समय का उपयोग परियोजनाओं के लिए या फ्लिप कक्षा में अभ्यास के लिए कर सकते है । जैसे इंटरनेट कनेक्टिविटी, तकनीकि उपकरण, होमवर्क समर्थन इत्यादि। इसलिए इन परिस्थितियों में कक्षा में फ्लिप, फ्लिप्ड अधिगम का एक आर्दश विकल्प बन जाता है। कक्षा में फ्लिप को अलग करता है, सीखनें में बदलाव लाता है और छात्रों को ध्यान केन्द्रित रहने में मदद करता है। शिक्षक प्रशिक्षण के लिए लूप इनपुट एक ऐसी तकनीक है जो शिक्षको को छात्र के दृष्टिकोण से नई शिक्षण विधियों का प्रामाणिक रूप से अनुभव करने की अनुमति देती है।

व्यक्तिगत रोटशन प्रतिमान :–

इस प्रतिमान के क्रियान्वयन में दिए गए पाठ्यक्रम या विषय के भीतर छात्र सीखने के तौर–तरीकों के बीच व्यक्तिगत रूप से अनुकूलित निश्चित कार्यक्रम पर घूमते है, जिसमें कम से कम एक ऑनलाईन सीखना है।

एक एल्गोरिदम या शिक्षक व्यक्तिगत छात्र कार्यक्रम निर्धारित करते है। व्यक्तिगत रोटेशन प्रतिमान अन्य रोटेशन प्रतिमान से भिन्न होता है क्योकि छात्रों को आवश्यक रूप से प्रत्येक उपलब्ध स्टेशन या मोंडैलिटी पर घुमना नही पड़ता है। स्टैकर और हॉर्न पृष्ट 11, **(2012)**

व्यक्तिगत रोटेशन प्रतिमान कक्षा–गहन से लेकर ऑनलाईन मध्यस्थता पर अधिक निर्भर है।

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

2. फलेक्स प्रतिमान :–

कक्षा में उपलब्ध शिक्षक द्वारा समर्थि मुख्य रूप से ऑनलाइन सीखने का अनुभव प्रदान करता है। इस प्रतिमान में छात्रों को लचीला कार्यक्रम प्रदान काने के लिए आमने–सामने और ऑनलाइन सीखने के संयोजन की पेशकश करता है।

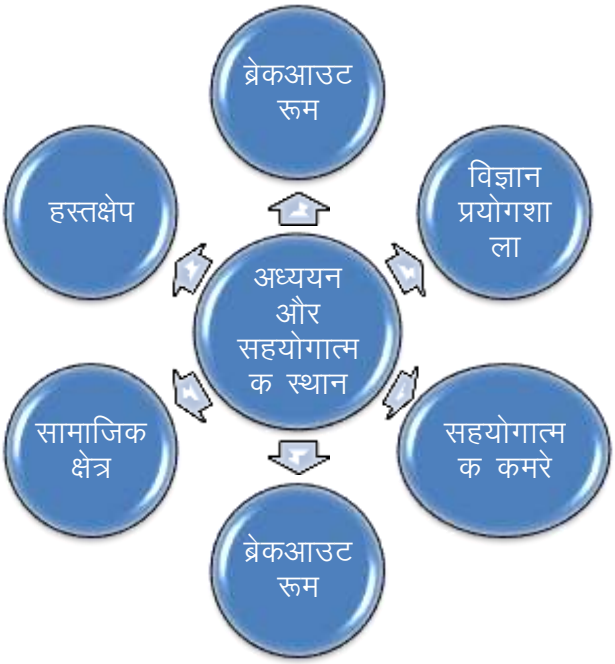

3. ला–कार्टे प्रतिमान :–

इस प्रतिमान में अन्य प्रतिमानों से अलग आमने–सामने पाठ्यक्रमों के अलावा ऑनलाइन पाठ्क्रम लेने का अवसर प्रदान करता है। इस प्रतिमान के द्वारा छात्र अपने विषय से सम्बन्धित अन्य पहलुओं पर भी ध्यान देते है।

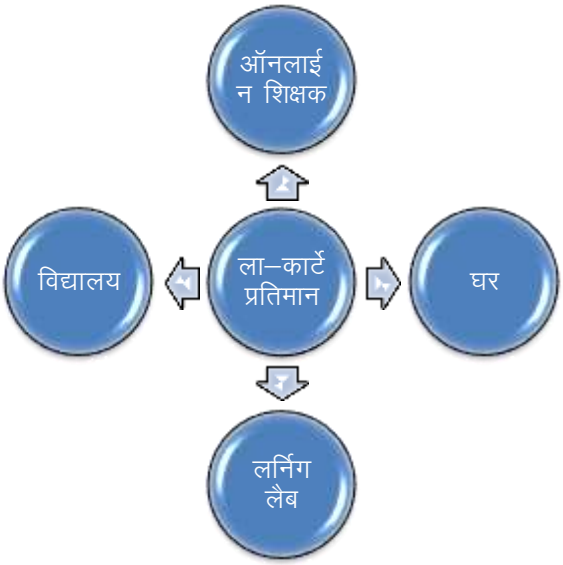

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

4. समृद्ध अभासी प्रतिमान :–

इस प्रतिमान में मुख्य रूप से ऑनलाइन अनुभवों का आदान–प्रदान होता है, तथा छात्र अपनी विषय–वस्तु के आधार पर आमने–सामने कक्षाओं में भाग लेते है। इन कक्षाओं में छात्र और शिक्षक आभासी माध्यमों के द्वारा एक साथ जुड़े रहते है।

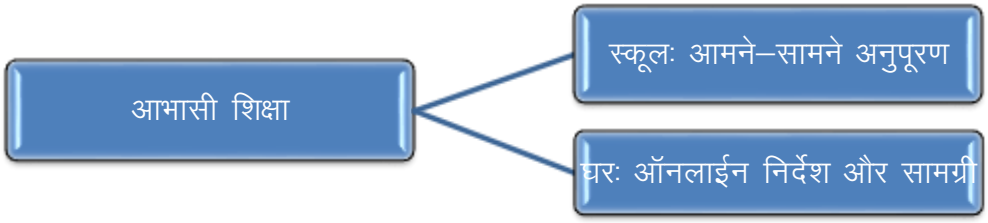

वर्णित सभी प्रतिमानों का उद्देश्य है कि मिश्रित अधिगम में छात्रों में शैक्षिक कौशलों का विकास हो। शैक्षिक प्रतिमानों के साथ ही मिश्रित अधिगम में अन्य शैक्षिक प्रौद्योगिक के द्वारा भी शिक्षण कार्य किया जाता है। शैक्षिक प्रौद्योगिक का शिक्षण तकनीकि के रूप में अलग–अलग माध्यमों द्वारा उपयोग किया जा सकता है।

मिश्रित अधिगम की अन्य शिक्षण विधियॉ :–

इसमें पारंपरिक कक्षाओं एवं ऑनलाइन कक्षाओं में उपयोग किए जाने वाले शैक्षिक प्रौद्योगिक को शिक्षण तकनीकि के रूप में व्याख्या किया गया है–

आमने–सामने की शिक्षण व्यवस्था :–

शिक्षण की पारंपरिक या मुख्य कक्षा के अर्न्तगत छात्र एवं शिक्षक आमने–सामने उपस्थित हो कर शिक्षण कार्य करते है। छात्रों द्वारा पूछे गए प्रश्नों का उत्तर शिक्षकों के द्वारा दिया जाता है। इस तरह की प्रक्रिया पारंपरिक कक्षा को संदर्भित करता है।

केन्द्रिय समूह के बीच परिचर्चा :–

अध्यापक शिक्षा का यह बड़ा ही महत्वपूर्ण पक्ष होता है, कि इस कार्यक्रम में अध्ययन करने वाले सभी छात्राध्यापकों को अपनें विषय–वस्तु से सम्बन्धित विभिन्न बिन्दुओं पर आपस में चर्चा करतें है। इन चर्चाओं मे विशेष रूप से अध्ययन विधियों को केन्द्र में रखकर वर्तालाप किया जाता है। किए गए चर्चाओं के परिणामस्वरूप उनमें पठन–पाठन की क्रियाओं के लिए नवीन तकनीकि विधियों का उपयोग करते है, इन विधियों के उपयोग छात्रों को सीखनें की प्रक्रिया तिब्रगति से होता है।

साथी समूह में बात–चीत :–

अपनें अध्ययन कार्यो में किसी भी विषय–वस्तु को सीखनें की प्रक्रिया को सरल व सहज बनानें के लिए, अपनें सहकर्मी समूह में बातार्लाप किया जाता है। इस समूह में वर्तमान समय के शिक्षण विधियों से सम्बन्धित तथ्यों पर भी चर्चा किया जाता है। इन सभी चर्चाओं का उद्देश्य रहता है कि नवीन विधि से अध्ययन कार्य को पूर्ण किया जाए।

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

ई–लाइब्रेरी से सीखने में वृद्धि :–

शैक्षिक विचारों में ज्ञानवर्धन के लिए पुस्तकों का अध्ययन किया जाता है। पुस्तक सुगमता से उपलब्ध हो यह हर छात्र की पहली स्वीकार्यता रहता है। विषय–वस्तु के अध्ययन के लिए छात्र पुस्तकालयों में उपलब्ध पुस्तकों का उपयोग करते है। पुस्तकालयों की संरचना में एक कड़ी ई–पुस्तकालय भी सम्मिलित हो गया है। पारंपरिक पुस्तकालयों में पुस्तकों की समस्या के निराकरण के लिए ई–पुस्तकालय का उपयोग किया जाता है। छात्रों को अपनें विषय–वस्तु से सम्बन्धित किसी और देशों व राज्यों में किए गए शोधों को जानने के लिए, ई–लाइब्रेरी की आवश्यकता महसूस होती है। जिसकी उपलब्धता से छात्र नवीन तथ्यों को और आसानी से सीख सकता है तथा अपनें ज्ञान और कौशलों को समृद्ध कर सकता है।

आभासी माध्यमों से कक्षाओं का संचालन :–

जब कक्षाओं का संचालन आभासी माध्यम से किया जाता है, जिसमें सम्मिलित सभी छात्र तत्परता के साथ पढ़ाए जा रहें विषय–वस्तु को सीखतें है। इन कक्षाओं के माध्यम से प्रश्नोंत्तर की क्रिया भी किया जाता है, तथा उनकें द्वारा पूछे जानें वाले प्रश्नों का निराकरण शिक्षकों द्वारा दिया जाता है। इसमें सभी प्रक्रियाए आभासी माध्यम से पूर्ण किया जाता है।

ऑनलाइन मूल्यांकन :–

संस्थानों द्वारा परंपरागत माध्यमों एवं आभासी माध्यमों से विषय–वस्तु को अध्ययन कार्य किया जाता है। पढ़ाये जाने के बाद लिए गए परीक्षाओं का मूल्यांकन भी किया जाता है। अध्ययन कार्य पूर्ण होने के उपरान्त शिक्षकों द्वारा ऑनलाइन परीक्षाए कराया जाता है। लिए गए परीक्षाओं का मूल्यांकन भी ऑनलाइन माध्यमों से ही पूर्ण किया जाता है।

वेबीनार की उपलब्धता :–

विषय विशेषज्ञयों के द्वारा उस विषय के मुख्य बिन्दुओं पर चर्चाओं के लिए आभासी माध्यम से आयोजित वेबीनार का आयोजन किया जाता है। इसमें अन्य कक्षाओं के छात्रों को भी सम्मिलित किया जा सकता है, इस कार्यक्रमों में विषय के मुख्य वक्ताओं द्वारा दिए जा रहें व्याख्यानों का ज्ञानार्जन छात्रों द्वारा किया जाता है।

यू–ट्यूब पर विषय–विशेषज्ञों की सक्रियतता :–

संचार माध्यम के रूप में प्रचलित एक और साफटवेयर है जिसे यू–ट्यूब के नाम से जाना जाता है। इस साफ्टवेयर के माध्यम से शिक्षा के क्षेत्र में नवाचार हुआ है। नवाचार से तार्त्पय है, कि जहॉ पारंपरिक कक्षाओं में शिक्षकों द्वारा अध्यापन कार्यो को ऑनलाइन या रिकार्डिग विडियों को यू–ट्यूब पर प्रसारित किया जाता है। इस साफटवेयर के उपयोग का उद्देश्य है कि एक स्थान पर ही पढ़ाए जा रहे विषयों को दूसरे स्थान पर भी छात्रों के लिए सम्भव हो कसे। इसके उपयोग से बहुत से छात्र एक साथ विषयों का ज्ञार्नजन करते है।

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

उपरोक्त में वर्णित सभी कथनों का उद्देश्य है कि छात्रों को सीखनें के अनेक माध्यम उपलब्ध हो सके। इन माध्यमों के उपयोग से छात्र अपनी सुगमता से नवीन शैक्षिक तकनीकियों का उपयोग कर सकता है, तथा माध्यमों के उपयोग से अपनें विषय की शिक्षा प्राप्त कर सकता है।

भारत में मिश्रित अधिगम का कार्यक्रम :–

भारत में कुछ शिक्षण की प्रक्रिया को निरौपचारिक माध्यमों से दिया जाता है। इस प्रणाली में **मुक्त शिक्षा, दूरस्थ शिक्षा** का नाम आता है, इन संस्थानों में शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम का संचालन किया जाता है, जिसमें छात्रों को विषय–वस्तु से सम्बन्धित विषयों को डॉक के माध्यमों एवं ऑनलाइन माध्यमों से उपलब्ध कराया जाता है। इस शिक्षा का एक पक्ष MOOCs के नाम भी जाना जाता है, जो कि एक साफ्टवेयर है। जिसे Massive Open Online Course कहा जाता है। MOOCs के माध्यम से शिक्षण को आसान बनाया जाता है, जिसमें छात्र को अपनी योग्यता के अनुसार सीखने का अवसर प्राप्त करता है। इस साफ्टवेयर के साथ ही अन्य साफ्टवेयर को भी आते है, जो ऑनलाइन माध्यमों से शिक्षा प्रदान करते है।

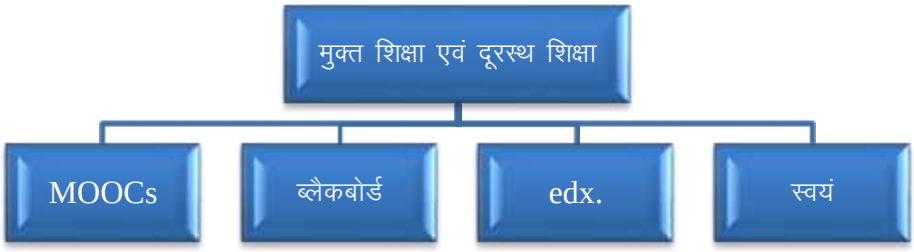

देश के विभिन्न राज्यों में संचालित सरकारी एवं गैर–सरकारी विश्वविद्यालयों तथा महाविद्यालयों द्वारा इस तकनीकि का उपयोग करके अध्यापन कार्य किए जाते है। अध्यापन कार्य पूर्ण होने पर छात्रों को ऑनलाइन उपाधि प्रदान किया जाता है। उपाधि प्रदान करने वाले संस्थानों के नाम निम्नवत् है – एमिटी ऑनलाइन, मणिपाल विश्वविद्यालय ऑनलाइन, एसआरएम विश्वविद्यालय चेन्नई, आईआईटी मद्रास, जैन विश्वविद्यालय बैंगलोर, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलगप्पा विश्वविद्यालय, अमृता विश्व द्यिापीठम कोयंबटूर, डॉ0 डीवाई पाटिल विद्यापीठ, विज्ञान प्रौद्योगिकी और अनुसंधान के लिए विग्नान फाउन्डेशन

इन सभी विश्वविद्यालयों में कुछ पाठ्यक्रमों की ऑनलाइन उपाधि प्रदान किया जाता है, परन्तु अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम को अभी इसमें सम्मिलित नही किया गया है। इन विश्वविद्यालयों का जिक्र इस उद्देश्य से किया जा रहा है, कि जैसे इनमें शिक्षा को ऑनलाइन माध्यमों के साथ चलाया जाता है। ठिक उसी प्रकार से अध्यापक शिक्षा कार्यक्रमों में भी सीखने के लिए परंपरागत कक्षाओं के साथ ही ऑनलाइन कक्षाओं को अपनाया जा सकता है। शिक्षण प्रक्रिया के दौरान छात्राध्यापकों में शिक्षण

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

कौशलों का विकास होता है तथा कौशलों के विकास से सेवाकालिन के समय अध्ययन कार्यो में उपयोग करके छात्रों को अध्ययन कार्य में निपुण किया जाता है।

अध्यपक शिक्षा में मिश्रित अधिगम की आवश्यकता :–

अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम का लक्ष्य है कि सेवापूर्व प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले छात्राध्यापकों को स्वंयम की सीखने के लिए शिक्षण प्रक्रिया का विश्लेषण कर सके। तथा विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि ज्ञान एवं कौशलों के विकास के लिए अध्यापक शिक्षा में नवीन तकनीकियों कि आवश्यकता है। शैक्षिक कौशलों का विकास करने के लिए शिक्षण की गुणवत्ता का पालन करना विशेष रूप से महत्वपूर्ण है (OECD 2010) ।

इसलिए नवीन शिक्षण विधियों को एकिकृत करके गुणवत्तापूर्ण शिक्षण को सम्भव किया जा सकता है। मिश्रित शिक्षण कार्यक्रम का संचालन एक नवीन शिक्षण तकनीकि के रूप में किया जा सकता है, जिसमें पारंपरिक कक्षाओं एवं ऑनलाइन कक्षाओं को एक साथ जोड़ता है। तथा शिक्षण कौशल के विकास के लिए तकनीकि को एकिकृत किया जाता है। शिक्षण के साथ तकनीकि का एकीकरण शिक्षक केन्द्रित शैक्षिक प्रणाली को समृद्ध करने के साथ ही छात्र केन्द्रित वातावरण के प्रति आकर्षित करने में प्रमुख भूमिका निभाता है। मिश्रित अधिगम से सम्बन्धित अध्ययनों के आधार पर व्यक्त किया जा सकता है।

राव (2019) ने मिश्रित शिक्षण : एक नई हाइब्रिड पद्धित का अध्ययन किया। इस अध्ययन में पाया कि विद्यार्थीयों को शिक्षा सम्बन्धित एक नवीन शैक्षिक समाधान प्रदान करता है। जिसमें मोबाईल शिक्षण और ऑनलाईन शिक्षण की गतिविधियों के साथ पारंपरिक कक्षा शिक्षण का प्रभावी मिश्रण किया जाता है। इस अध्ययन का उद्देश्य रहा है कि विद्यार्थीयों को सीखनें के विभिन्न प्रकार के माध्यमों से उनके शिक्षण कौशल का विकास हो सके।

बीवर तथा अन्य (2014) ने मिश्रित शिक्षण : मॉडल परिभाषित करना और परीक्षण करना क्रियान्वयन का समर्थन के लिए शर्ते पीईआरसी अनुसंधान संक्षित का अध्ययन किया। इस अध्ययन में पाया गया है कि स्कूलों में मिश्रित शिक्षण के दृष्टिकोणें को एकीकृत किया जाए।

कुमार तथा अन्य (2021) ने मिश्रित शिक्षण उपकरण और अभ्यास : एक व्यापक विश्लेषण का अध्ययन किया। इस अध्ययन में पाया कि कोविड–19 के समय पारंपरिक शिक्षा व्यवस्था बन्द होने के बाद से ही शिक्षण की प्रक्रियाओं को ऑनलाईन माध्यमों पर निर्भर हो गया था। इस अध्ययन का उद्देश्य है कि पाठ्यक्रमों को लचिला बनाया जा सके। जिसमें पाठ्यक्रमों का संचालन पारंपरिक कक्षा के साथ–साथ प्रौद्योगिक का उपयोग करके ऑनलाईन माध्यमों से कक्षाओं का संचालन किया जाता है। इन कक्षाओं के संचालन से देश में अपात की स्थितियों में आमने–सामने के पाठ्यक्रमों को मिश्रित शिक्षण प्रतिमान में प्रभापी स्थानान्तरित करके सूचिवद्ध किया जाता है। मिश्रित शिक्षा सभी संस्थाओं में शिक्षण एवं शिक्षकों के प्रशिक्षण के लिए सहायक है।

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

डस्कन और यिल्डिज (2020) ने मिश्रित अधिगम : सीखने के परिणामों को बढ़ावा देने के लिए संभावित दृष्टिकोण का अध्ययन किया। इस अध्ययन में कि शिक्षार्थीयों की दक्षताओं का विकास करने के लिए मिश्रित शिक्षा प्रणाली का उपयोग किया गया है। इस अध्ययन का उद्देश्य है कि शिक्षा में तकनीकि उपकरणों का समावेश किया जाए। जिससे पारंपरिक शिक्षा में प्रौद्योगिकी के एकीकरण से शैक्षिक परिणामों में सुधार किया जा सकता है।

पारंपरिक कक्षा में तकनीकि का एकीकरण से उचित वातावरण में शिक्षण की प्रक्रिया को सीखने के लिए छात्रों की सक्रिय भागीदारी को बेहतर बनाता है। पारंपरिक कक्षा में निर्देशों को स्पष्ट व अच्छी तरह से समझाया जाता है, इस निर्देश से छात्राध्यापकों को सीखने में सहायता प्राप्त होता है। इन कक्षाओं के माध्यम से छात्राध्यापक व शिक्षक के बीच अच्छा ताल–मेल रहता है। उसी प्रकार से ऑनलाइन कक्षाओं में छात्र और शिक्षक अपनी क्रियाकलापों से एक–दूसरे से प्रभावित होते है, जो शिक्षण की गुणवत्ता का महत्तवपूर्ण पक्ष माना जाता है।

मिश्रित शिक्षण कार्यक्रम का मुख्य लक्ष्य है, जो सबसे कुशल और प्रभावी शिक्षण प्रदान करता है। इस शिक्षण प्रक्रिया के परिणामस्वरूप सामाजिक दृष्टिकोण से सार्थक एवं रचनात्मक शिक्षण अनुभव प्राप्त होते है जिन्हे मिश्रित शिक्षा में महत्वपूर्ण माना जाता है। शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम में छात्रों को सीखने के लिए शिक्षण की नवीन तकनीकि पद्धतियों का क्रियान्वयन करने के साथ ही उन्हें प्रशिक्षित भी करने की आवश्यकता है।

उपसंहार :–

सेवापूर्व शिक्षा एवं सेवाकालिन शिक्षा कार्यक्रमों का संचालन किया जाता है। सेवापूर्व शिक्षा का संचालन अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम के द्वारा किया जाता है। अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम में मिश्रित शिक्षा के उपयोग पर बल दिया गया है, इस शिक्षा का उद्देश्य है कि भविष्य के लिए तैयार किए जा रहे अध्यापकों को शैक्षिक तकनीकि का ज्ञान अवश्य हो। इनके उपयोग से कक्षा शिक्षण या अन्य माध्यमों से प्रदान किए जा रहे शिक्षण प्रक्रिया को क्रियान्वित किया जा सके।

सेवाकालिन शिक्षा का तार्त्पय है कि अध्यापन कार्य कर रहे अध्यापकों से है। इन अध्यापकों को समय–समय शिक्षण की नवीन तकनीकियों से सम्बन्धित प्रशिक्षित किया जाना चाहिए। नवीन तकनीकियों से अध्यापक अपनी शिक्षण कार्य को और अधिक प्रभावशाली बना सके। इसलिए सेवापूर्व एवं सेवाकालिन अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम के मिश्रित अधिगम के माध्यम से सीखने की प्रक्रिया को अपनाने की आवश्यकता है।

सन्र्दभ सूची

बीवर के0 जेसिका तथा अन्य (2014) :– मिश्रित शिक्षण : मॉडल परिभाषित करना और परीक्षण करना क्रियान्वयन का समर्थन के लिए शर्ते पीईआरसी अनुसंधान संक्षित

लालिमा और डंगवाल लता किरण (2017) :– मिश्रित शिक्षा : एक अभिनव दृष्टिकोण

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

मोहम्द अहमद (2017) :– अरेबियन गल्फ यूनिर्वसिटी में स्नातक छात्रों की उपलब्धि और गहन शिक्षा पर मिश्रित शिक्षण वातावरण डिजाइन करने का प्रभाव

राव चन्द्रशेखर प्रो0 वी0 (2019) :– मिश्रित शिक्षण : एक नई हाइब्रिड पद्धित

डस्कन एडेम, यिल्डिज युनूस (2020) :– मिश्रित अधिगम : सीखने के परिणामों को बढ़ावा देने के लिए संभावित दृष्टिकोण

कुमार डॉ0 प्रदीप (2021) :– मिश्रित शिक्षण : प्रभावी पाठ्चर्या संचालन के लिए नवीन दृष्टिकोण

कुमार आर्दश तथा अन्य (2021) :– मिश्रित शिक्षण उपकरण और अभ्यास : एक व्यापक विश्लेषण

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies